बाप भी कह सकते है ब्रहमा दवारा कि बच्चों गुड़ मार्निंग। परन्तु फिर बच्चों को भी कहना पड़े। रेस्पान देना पड़े। यहां है ही बाप और बच्चों का कनेक्शन। नये जो हैं जब तक पक्के हो जावें कुछ ना कुछ पूछते रहेंगे। यह जो विदवान आचार्य है वो तो बहुत तीखे होते हैं। शास्त्र पढ़े हुये है। बाप कहते है वो है सभी भक्ति मार्ग, हरिदवार वा काशी में बैठ कर राजयोग सिखावेंगें क्या? वो बैठे ही है गंगा तट पर। समझते है गंगा जल पीते-2 मुक्ति को पावेंगें। भगवान तो वहां तो नही जावेंगें नां। निराकार भगवान को रथ तो चाहिये। भागीरथ भी दिखाते है। भगवान नें आकर ज्ञान दिया है। कृष्ण को ज्ञान सागर नही कहा जाता। नां उनकें पास कोई राजयोग सिखाने का ज्ञान है। यह तो पढ़ाई है। भगवानोवाच्य भी लगा हुआ है। भगवान है निराकार। यह बाबा अच्छी रीत पक्का कराते हैं किसीको भी समझाने लिये। क्यूंकि उस तरफ है माया का जोर। उनको तो अपने फालोवरस बहुत चाहिये। यहां वो तो बात नही। बाप तो समझाते हैं जिन्होंनें कल्प पहले लिया है वो आपही आवेंगें। ऐसे नही फलानी चली ना जावें इसको पकड़ना है। चली जावें जाये तो चली जावें। यहां तो जीते जी मरने की बात है। बाप ऐडाप्ट करते है। ऐडाप्ट किया ही जाता है कुछ वर्सा देनें लिये। सन्यासियों के इतने ढ़ेर फालोवरस है वर्सा क्या देंगें? ऐडाप्ट करते ही है माता-पिता। सन्यासी आद ऐडाप्ट कर नही सकते। बच्चें मां-बाप पास आते ही है वर्से कें लालच पर। शाहुकार का बच्चा हो वो कब गरीब पास ऐडाप्ट होगा क्या? इतना धन दौलत आद सब छोड़ा कैसे जावेगा। ऐडाप्ट करते है शाहुकार। अभी तुमजानते हो बाबा हमको स्वर्ग की बादशाही देते है। क्यूं नही उनकें बनेंगें। हर एक बात में लालच रहती है। जितना बहुत पढ़ेंगें उतनी बहुत लालच होगी। तुम भी जानते हो बाप नें हमको ऐडाप्ट किया है वर्सा देनें, बाप भी कहते है तुम सबको हम फिर से 5000 वर्ष पहलें मुआफिक ऐडाप्ट किया है। तुम भी कहते हो बाबाहम आपकें है। 5000 वर्ष पहलें भी आपकें बने थे। तुम प्रैक्टीकल में कितने ब्रहमा कुमार कुमारियां हो? प्रजापिता भी तो नामी ग्रामी है। जब तक शुद्र से ब्राहमण नां बनो। तो देवता बन नही सकते। तुम बच्चों की बुधी में अब यह चक्र फिरता रहता है हम शुद्र थे, अब ब्राहमण बनें है, फिर देवता बनेंगें। सतयुग में हम राज्य करेंगें तो इस पुरानी दुनियां का विनाश जरुर होना है। पूरा निश्चय नही बैठता है तो फिर चले जाते है। कई बच्चे ही गिर जाते हैं। यह भी ड्रामा में ही नूंध है। माया दुश्मन सामने जो खड़ी है तो वो अपनी तरफ खेंच लेती है। बाप घड़ी-2 पक्का करते है माया में फंस ना जाना। नही तो अपनी तकदीर को लकीर लगा देंगें। बाप ही यह पूछ सकते है कि आगे कब मिले थे? और कोई को पूछने का अकल आवेगा नही। बाप कहते है मुझे भी फिर सें गीता सुनाने आना पड़े। आकर रावण की जेल सें छुड़ाना पड़े। वेहद का बाप वेहद की ही बात समझाते है। रामायण आद में कितनी लम्बी चौड़ी कथायें लिखी है। अभी 10 सिरों वाला कोई मनुष्य होता है क्या? श्री रामचन्द्र जिनकी इतनी महिमा करते है, कृष्ण सें भी राम को ऊपर लें गये है। कृष्ण को दवापुर में राम को त्रेता में दिखाते हैं। ऐसे राम की फिर सीता चुराई गई। यह सब है दन्त कथायें। हनुमान के लिये कहते है पवन सें पैदा हुआ। कितनी नानसेन्स बातें है। यह है सब भक्ति मार्ग के शास्त्र यह भी ड्रामा में ही नूंध है फिर भी यही बनेंगें। अभी तुमको समझाया है रांग क्या है राईट क्या है? बाप सब सिद्ध कर बताते हैकि यह सब रांग है। बाप कहते है तुमने जो सुना राम की सीता चुराई गई कहां सें? राम तो त्रेता में दिखाते है वहां सें रावण कहां सें आया? जो सीता को ले गया। फिर बन्दरों नें पुल बांधे। बन्दर कैसे पुल बाधेंगें। अब बाप राईट है वा, शास्त्र राईट है? बन्दर कैसे सीस्स उठावेंगें। अच्छा राम की बन्दरों की सैना थी, रावण की सैना कहां? बन्दर लड़ाई किसके साथ करते है। बाप समझाते है अभी रावण का राज्य है। पतित राज्य है। आधा कल्प सें यह शुरु होता है। रावण को दस सिर दिखाते है। बाप कहते है वो है पांचविकार स्त्री के, पांच विकार पुरुष कें। विष्णु को चार भुजायें दिखाते

है। ऐसे कोई मनुष्य नही होते है। यह तो प्रवृति मार्ग दिखाया जाता है। यह है ऐम आब्जेक्ट। विष्णु द्वारा पालना। दो है नां। विष्णु पुरी को कृष्ण पुरी भी कहते है। कृष्ण को तो दो भुजायें ही दिखावेंगे नां मनुष्य तो कुछ भी नही समझते। बाप हर एक बात समझाते है। यह सभी है भक्ति मार्ग। अब तुमको ज्ञान है। तुम्हारी ऐम आब्जेक्ट ही है नर से नारायण बनने की। यह गीता पाठशाला है ही जीवन मुक्ति प्राप्त कराने के लिये। ब्राह्मण तो जरूर चाहिये। यह है रूद्र ज्ञान यज्ञ। शिव को रूद्र भी कहते है। अब बाप पूछते है ज्ञान यज्ञ कृष्ण का है वा शिव का? शिव परमात्मा ही कहते है। शंकर देवता है। इन्होंने फिर शिव शंकर इकठे कर दिये है। अभी बाप कहते है हमनें इसमें प्रवेश किया है। तो तुम कहते हो बाप दादा। वो फिर कहते है शिव शंकर। शंकर शिव नही कहते। शिव शंकर कहते है। तुम कहते हो बाप दादा। तो शिव परमात्मा हो गये वो देवता। शंकर को ज्ञान सागर नही कहेंगे। नां ब्रह्मा विष्णु को कहेंगे। ज्ञानसागर तो है ही एक। अभी तुम जानते हो ब्रह्मा सो विष्णु बनते है ज्ञान से। चित्र भी बरोबर बनाते है विष्णु की नाभी से ब्रह्मा। इनका अर्थ भी कोई समझ नही सकते। ब्रह्मा को शास्त्र हाथों में दे दिये है। अब शास्त्रों का सार बाप सुनाते है वा ब्रह्मा? यह भी मास्टर ज्ञान सागर बनते है। बाकी चित्र इतने ढेर बनाये है। वो कोई भी यथार्थ नही है। वो है सब भक्ति मार्ग। मनुष्य कोई 8, 10 भुजा वाले होते नही। यह तो सिर्फ प्रवृती मार्ग दिखाया है। रावण का भी अर्थ दिखाया है। आधा कल्प है रावण राज्य, रात। आधा कल्प है राम राज्य दिन। बाप हर एक बात समझाते है। इसमें भी नम्बरवन बात है बाप को सर्वव्यापी कह देते है तो फिर फादर हुड कैसे हो सकते है। फादर-2 को कब बसी देते है क्या। तुम सभी एक बाप के बच्चे हो। बाप ब्रह्मा द्वारा विष्णु पुरी की स्थापना करते है और तुमको राजयोग सिखाते है। जरूर संगम पर ही राजयोग सिखावेंगे। द्वापुर में गीता सुनाई यह रांग हो जाता है। बाप सच बताते है। बहुतों को ब्रह्मा का कृष्ण का सा0 भी होता है। ब्रह्मा का सफेद पोश ही देखते है। शिव बाबा तो है बिन्दी। बिन्दी का सा0 हो। कुछ समझ नां सकें। तुम कहते हो हम आत्मा है। अब आत्मा को किसने देखा है। कोई ने नही। वो तो बिन्दी है। समझ सकते है नां। जो जिस भावना से जिसकी पूजा करते है उनका ही उनका सा0 होगा। दूसरा अगर रूप देखें तो मूंझ जावे। हनुमान की पूजा करेंगे तो उनको वो ही दिखाई देगा। गनेश के पुजारी को वो ही दिखेगा। अब ऐसे सुंड वाला कोई होता है क्या। यह भी सब बनाया है बैठ कर। कितनां खर्चा करते है। वेस्ट आफ मनी वेस्ट, आफ टाईम। बाप कहते है भक्ति मार्ग में तुम कितना समय वेस्ट करते हो। हमनें तुमको इतना धनवान बनाया हीरे जवाहरों के महल थे। फिर वो अनगिणत धन था। अभी तुम कंगाल बन गये हो। भीख मांग रहे हो। बाप तो कह सकते है नां! अब तुम बच्चे समझते हो बाप आये है। हम फिर से विश्व के मालिक बन रहे है। यह ड्रामा अनादी बना हुआ है। हर एक ड्रामा में अपना-2 पार्ट बजाते है। कोई एक शरीर छोड़ दूसरा शरीर जाकर लेते है। इसमें रोने की क्या बात है? सतयुग में कभी रोते नही है। क्यों कि समझते है एक शरीर छोड़ दूसरा लेंगे। जितना अभी तुम मोह जीत बन रहे हो मोह जीत राजायें यह लक्ष्मी नारायण आदि है। वहा मोह होता नही। बाप अनेक प्रकार की बाते समझाते रहते है। साधु लोग यह समझा नही सकते। वो तो कहते है भगवान निराकार नाम रूप से न्यारा है। अरे नाम रूप से न्यारी कोई चीज थोड़े ही होती है। हे भगवान ओ गाड फादर कहते है नां। नाम रूप है नां। लिंग को शिव बाबा भी कहते है। बाबा तो है नां बरोबर। बाबा के जरूर बच्चे भी होंगे निराकार आत्मा ही बाबा कहती है निराकार को। मन्दिर में जावेंगे उनको कहेंगे शिव बाबा। फिर घर में आकर बाप को भी कहते है बाबा। अर्थ तो समझते नही है। हम उनको शिव बाबा क्यूं कहते है। शिव के पुजारी बहुत है परन्तु बेसमझ। भारत में लक्ष्मी नारायण का राज्य था फिर क्या हुआ? 84 जन्म लेते-2 इतने बेसमझ बन गये। भक्ति मार्ग में पैसे खर्च करते है। वेस्ट आफ टाइम, अभी तुमको शास्त्र आदि कुछ बनाने की दरकार नही है। बाप आ...

अक्षर ही दो वताते है।अपन को याद करो वे वादशाही तुम्हारी है।यह वड़ा भारी इमतिहान है।मनुष्य वड़ा परिक्षा पास करते है तो पहले वाली पढ़ाई थोड़ेई याद रहती है। पढ़ते-2 आखरीन अन्त वुधी में आ जाती है यहा भी ऐसे है।तुम पढ़ते आये हो अन्त में फिर वाप कहते है मनमनाभव।तो देह का अभिमान छूट जावेगा। यह मनमनाभव की टेव पड़ी हुई होगी तो पिछाड़ी में भी वाप और वर्सा याद रहेगा।मुख्य है यह कितना सहज है।उस पढ़ाई में भी अभी तो पता नही क्या-2 पढ़ते है।जैसा है राजा वैसी ही वहां की रसमरिवाज होते है।आगे मन सेर पाव का हिसाव चलता था। अभी तो किलो आद-2 क्या निकल पड़े है। कितने अलग-2 प्रान्त हो गये है।देहली में जो चीज एक रुपये सेर वही वाम्वे में मिलेगी दो रुपये सेर।क्यों कि प्रान्त अलग-2 है। हर एक समझते है हम अपने प्रान्त को भूखो थोड़ेई मारेंगे।कितने झगड़ आद होते है कितना रौला है।राजा था तो प्रोन्त आद का रौला थोड़ेई था। अभी हो गया है प्रजा का प्रजा पर राज्य।इसको कहा जाता है अनलांफुल, अराईटस, इरीलीजस, इनसाल्वन्ट। भारत कितना साल्वन्ट था। फिर 84का चक्र लगाते इनसाल्वन्ट वन गये है।कहा जाता है हीरे जैसा जन्म अमोलक कौड़ी वदले खोया है। वाप कहते है तुम कौड़ियों पिछाड़ी क्यू मरते हो?अव तो वाप से वर्सा लो पावन वनने का।वुलाते भी हो हे पतित पावन आओ पावन वनाओ। तो इससे सिद्ध है कि पावन थे अव नही हो। अभी है ही कलियुग। वाप कहते है मै पावन दुनिया वनाऊगा तो पतित दुनिया का जरूर विनाश होगा।इसलिये ही यह महाभारत लड़ाई इस रुद्र यज्ञ से प्रजवलित हुई है।ड्रामा मे यह विनाश होंने की ही नूंध है। पहले-2 तो वावा को सा0 हुआ देखा इतनी वड़ी राजाई मिलती है तो वहुत खुशी होने लगी। विनाश सा0 भी कराया, मनमनाभव मदयाजीभव।तुम यह श्री ल न . वनेंगे यह गीता के ही अक्षर है।कोई-2 अक्षर गीता के ठीक है वाकी सव है झूठ।वाप भी कहते है तुमको जो यह ज्ञान सुनाता हू यह फिर प्रायःलोप हो जाता है।कोई को भी पता नही कि जव(ल न)का राज्य था तो और कोई धर्म नही तो उस समय आवादी कितनी कम होती है। तो यह चेंज होनें लिये भी जरूर विनाश चाहिये।महाभारत लड़ाई भी है। और कोई शास्त्र में इनका वर्णन नही है।जरूर भगवान भी होगा। कृष्ण तो हो नही सकते।तव किसने सुनाया?तव शिव जयन्ती मनाते है शिव वावा नें क्या आकर किया वो भी नही जानते है।अव वाप समझाते है गीता से कृष्ण की आत्मा को राजाई मिली। मात-पिता कहेंगे गीता को फिर जिससे ही तुम देवता वनते हो।इसलिये चित्र में भी दिखवाया है कि कृष्ण नें गीता नही सुनाई।कृष्ण गीता के ज्ञान से राज योग सीख कर यह वना।कल फिर कृष्ण होगा। उन्होंनें फिर शिव वावा के वदले कृष्ण का नाम डाल दिया है।तो वाप समझाते है यह तो अपने अन्दर पक्का निश्चय कर लो ऐसा नां हो साधु सन्त आद उल्टी वातें सुना कर गिरा देवें। वहुत वातें पूछते है विकारों विना सृष्टी कैसे चलेगी? यह कैसे होगा? अरे:- तुम्ही खुद कहते हो वो वाइसलैस दुनियां थी। सम्पूर्ण निरविकारी कहते भी हो नां फिर विकार की वात कैसे हो सकती। तुम्हारे दुश्मन वहुत है। अव तुम कचें जानते हो कि वेहद के वाप से वेहद की वादशाही मिलती है। तो ऐसे वाप को याद क्यू नही करना चाहिये।यह है ही पतित दुनियां।कुम्भ के मेले पर कितने लाखों जाते है।अव कहते है वहां तीन न नदिया मिलती है। तीसरी गुप्त है।यह भी झूठ.नदी गुप्त हो सकती है? क्या? यहा भी गऊ मुख वताया है। कहते है गंगा यहां से आई है। अरे:- गंगा अपना रास्ता लेकीर समुन्द्र में जावेगी की यहा तुम्हारे पहाड़ पर आ जावेगी।भक्ति मार्ग के कितने धक्के है।ज्ञान भक्ति फिर है वैराग।एक है हद का व वैराग। दूसरा है वेहद का।सन्यासी सिर्फ घर वार छोड़ कर जाकर जंगल में रहते है।यहां तो वो वात नही। तुम वुधी से सारी पुरानी दुनिया का सन्यास करती हो।तुमको पढ़ना है फिर पढ़ाना है नां। (वाकी फिर) ओम

डायरेक्शन:-वाप दादा का वाम्वे जाने का प्रोग्राम फाईनल कैंसिल है।आप कहेंगे क्यूं? वाप दादा कहे क्यूं का प्रश्न नही है। वस ड्रामा में इस समय वाम्वे जाने का प्रेग्राम नही है। ड्रामा।

गुड मानिंग।